



बिना पराली जलाए, बिना खेत जोते मिला भरपूर उत्पादन



डा. द्वारका, शोभाराम ठाकुर, डा. आनन्द मिलन, निशा चढ़ार

- 1 अतिथि शिक्षक, कीटशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश- 488001.
- 2 वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एक्रिप परियोजना तिल फसल, कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश- 472001.
- 3 अतिथि शिक्षक, पौधरोग विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश- 488001.
- 4 एम.एससी.(बॉटनी), महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश- 472001.

भारत की कृषि व्यवस्था वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, अनियमित वर्षा, बढ़ती उत्पादन लागत तथा प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण जैसी अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। विशेष रूप से धान, गेहूं फसल प्रणाली वाले क्षेत्रों में धान कटाई के बाद पराली जलाने की समस्या व्यापक रूप से देखने को मिलती है। इससे न केवल पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है, बल्कि मिट्टी के लाभकारी सूक्ष्मजीवों का नाश और जैविक पदार्थों की कमी भी होती है। छिंदवाड़ा जिले के किसानों के सामने भी इसी प्रकार की समस्याएँ थीं। अधिकांश किसान धान कटाई के बाद पराली जलाकर खेत की जुताई करते थे, जिससे डीजल एवं श्रम लागत बढ़ती थी तथा मिट्टी की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था। श्री किशोर पवार एक प्रगतिशील एवं नवाचारी किसान हैं, जो खेती में वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। उन्होंने कृषि विभाग एवं विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में टिकाऊ एवं जलवायु-अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाकर अपने क्षेत्र में एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया है।



किसान का परिचय:

नाम: श्री किशोर पवार, छिंदवाड़ा, मध्यप्रदेश।

जलवायु परिवर्तन की चुनाती, खेती में नई सोच
पिछले कुछ वर्षों में असमय वर्षा, तापमान में उतार-चढ़ाव और प्राकृतिक विपरीत परिस्थितियों ने पारंपरिक खेती को जोखिम भरा बना दिया है। गहरी जुताई, अधिक डीजल खर्च और पराली जलाने से लागत बढ़ती थी और मिट्टी की गुणवत्ता भी प्रभावित होती थी। कृषि विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने किशोर पवार को आधुनिक तकनीकों को समझाया और उन्होंने अपने खेत में लागू करने का निर्णय लिया। उन्होंने साबित किया कि वैज्ञानिक सोच अपनाने से खेती को टिकाऊ और लाभकारी बनाया जा सकता है।

बारिश ने रोका, तकनीक ने बचाया

इस वर्ष बुवाई के समय अप्रत्याशित वर्षा के कारण खेतों में अधिक नमी थी। पारंपरिक पद्धति में

बदलते मौसम और अनियमित वर्षा के दौर में खेती करना आसान नहीं रहा। ऐसे समय में मध्यप्रदेश शासन द्वारा किसानों की आय बढ़ाने, लागत घटाने और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के उद्देश्य से चलाए जा रहे जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम नई उम्मीद बनकर उभरे हैं। इन्हीं प्रयासों का सकारात्मक परिणाम है विकासखंड मोहखेड़ के ग्राम कामठी के प्रगतिशील किसान किशोर पवार की सफलता। कृषि विभाग, छिंदवाड़ा और बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया (बीसा) के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में उन्होंने जीरो टिलेज और अवशेष प्रबंधन तकनीक अपनाकर कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त किया।

खेत सूखने का इंतजार करना पड़ता, जिससे बुवाई में देरी होती और उत्पादन प्रभावित होता। लेकिन जीरो टिलेज तकनीक के कारण बिना खेत सुखाए समय पर बुवाई संभव हुई। परिणामस्वरूप फसल की बढ़वार उत्कृष्ट रही। बालियां लंबी निकली और दाने पूरी तरह भरे हुए प्राप्त हुए।

जब बीज दिखा तो लोग हंसे

जीरो टिलेज से बुवाई के बाद कुछ बीज सतह पर दिखाई दे रहे थे। इसे देखकर कुछ ग्रामीणों ने तंज कसा और रोटावेटर चलाने की सलाह दी, लेकिन किशोर पवार ने वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन पर भरोसा रखा। कुछ ही दिनों में खेत हरे-भरे पौधों से लहलहा उठा। यह सफलता देखकर वही किसान अब इस तकनीक को अपनाने के लिए उत्साहित हैं।

समय और धन दोनों की बचत

धान कटाई के बाद आमतौर पर किसान पराली जलाते हैं या गहरी जुताई करते हैं। किशोर पवार ने पराली नहीं जलाई, खेत की जुताई नहीं की, जीरो टिलेज मशीन से सीधे बीज बोए। अवशेषों की परत ने खेत में नमी को बनाए रखा और जैविक उर्वरता बढ़ी। इससे प्रति एकड़ लगभग 2,000 से 3,000 रुपये की लागत बचत हुई।

समस्या

क्षेत्र में किसानों के सामने निम्न प्रमुख समस्याएँ थीं—

- धान कटाई के बाद पराली जलाने की प्रथा।
- बार-बार जुताई के कारण बढ़ती लागत।
- मिट्टी की उर्वरता और जैविक पदार्थों में कमी।
- अनियमित वर्षा के कारण नमी संरक्षण की समस्या।
- पर्यावरण प्रदूषण और मिट्टी के सूक्ष्मजीवों का नाश।

हस्तक्षेप

कृषि वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में श्री किशोर पवार को "जलवायु-अनुकूल कृषि तकनीकों" के बारे में जानकारी दी गई। उन्हें विशेष रूप से निम्न तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया—

- जीरो टिलेज
- अवशेष प्रबंधन

धान की कटाई के बाद उन्होंने खेत में मौजूद पराली को जलाने के बजाय खेत में ही सुरक्षित रखा और उसी अवशेष के बीच सीधे गेहूँ की बुवाई की।

इस पद्धति से मिट्टी की संरचना और नमी संरक्षण में सुधार हुआ।

परिणाम

इस तकनीक के प्रयोग से निम्न सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए—

- फसल की वृद्धि एवं विकास में सुधार।
- बालियों का बेहतर विकास और दानों की अच्छी भराव।
- खेत में नमी संरक्षण बेहतर।
- खरपतवार की समस्या में कमी।
- डीजल और श्रम लागत में कमी।

प्रभाव

इस तकनीक को अपनाने से श्री किशोर पवार को महत्वपूर्ण आर्थिक एवं पर्यावरणीय लाभ प्राप्त हुए—

- प्रति एकड़ लगभग 2000–3000 रुपए तक लागत में बचत।
- मिट्टी की "उर्वरता और संरचना में सुधार।
- पराली न जलाने से "पर्यावरण प्रदूषण में कमी।
- टिकाऊ और जलवायु-अनुकूल खेती को बढ़ावा।

उनकी सफलता से प्रेरित होकर गांव के अन्य किसानों ने भी इस तकनीक को अपनाने में रुचि दिखाई और धीरे-धीरे यह पद्धति क्षेत्र में लोकप्रिय होने लगी।

किसान की प्रतिक्रिया

श्री किशोर पवार का कहना है कि यदि किसान वैज्ञानिकों की सलाह और आधुनिक तकनीकों को अपनाएं, तो कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। उनका अनुभव बताता है कि "जीरो टिलेज और अवशेष प्रबंधन" न केवल उत्पादन बढ़ाते हैं बल्कि मिट्टी और पर्यावरण की रक्षा भी करते हैं।

निष्कर्ष

श्री किशोर पवार की यह सफलता कहानी यह दर्शाती है कि यदि किसान वैज्ञानिक पद्धतियों और नवाचार को अपनाने का साहस करें, तो खेती को अधिक लाभकारी, टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल बनाया जा सकता है। वास्तव में यह उदाहरण इस बात का सशक्त प्रमाण है कि न पराली जलाई, न खेत जोता, फिर भी मिली भरपूर फसल।

*Corresponding E-mail:
dwarkaprasadjnkvv@gmail.com